मूल्य रु. ५-०० मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक १९८ • जनवरी -२०२४

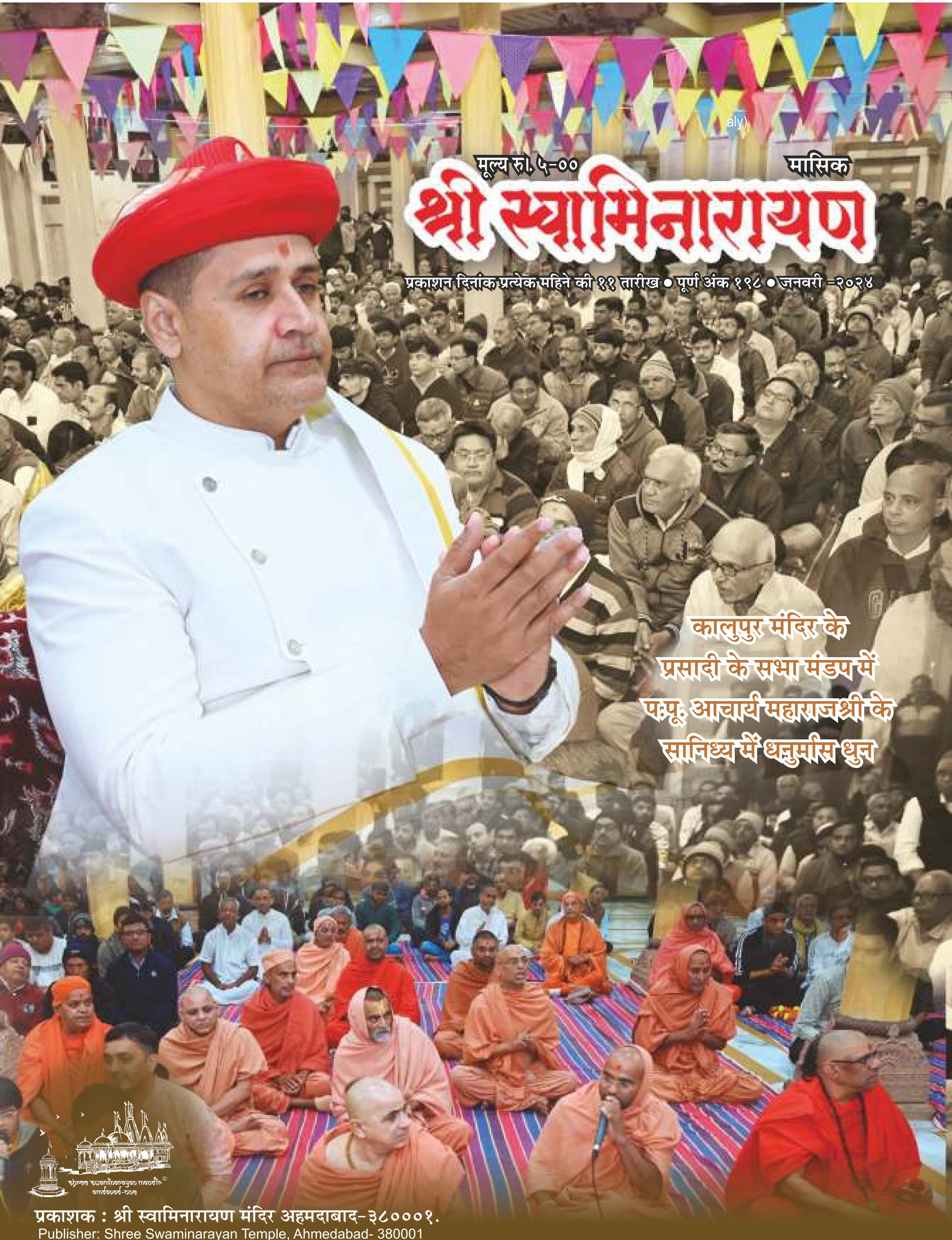

कालुपुर मंदिर के प्रसादी के सभा मंडप में प.पू. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में धनुर्मास धुन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.
Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

कलोल पंचवटी मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजीकी आऱ्ती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

ओला मंदिर के ३० वे पाटोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

कनीपुर मंदिर का ५ वाँ पाटोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

गांधीनगर (से-२) मंदिर के २४ वे पाटोत्सव के अवसर पर आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

मुबारकपुरा मंदिर के १३ वे पाटोत्सव और शाकोत्सव के अवसर पर सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

सोजा गाँव में पारायण के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

जीवराज पार्क मंदिर में शाकोत्सव करते संत ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ ● अंक : १९८ ● जनवरी-२०२४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	''जेतलपुर का महल''	०६
०४.	श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृत वचन	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१२
०६.	भक्ति सुधा	१७
०७.	सत्संग समाचार	१९

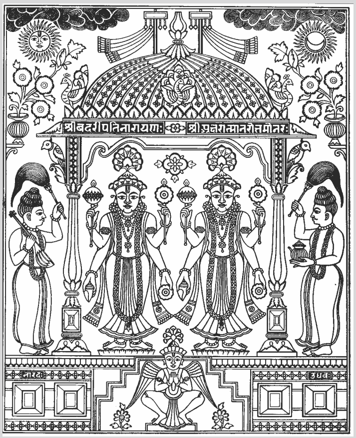

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

मानव जीवन का उद्देश्य परम पद की प्राप्ति करना है। हम लोग शरीर को सब कुछ समझ लेते है। शरीर को ही केन्द्र में रखकर सारे क्रिया-कलाप हम लोग करते है। लेकिन महाराज ने हमलोगो को परम पद की प्राप्ति के लिये कठिन माध्यम वचनामृत में कहे है।

भगवान के स्वरुप को मन की अखंड वृत्ति रखना है। वृत्ति को भगवान के स्वरुप में अखंड रखने के लिये मै मेरा का अज्ञान दूर करना होगा। इसके लिये सत्संग अनिवार्य है। सत्संग करने से अपना अवगुण दिन प्रतिदिन दिखायी देने लगता है। और भक्त को भगवान के गुण दिखाई देने लगते है।

प्रिय भाईयो। हम सभी को यह सभा गृह और यह मंदिर प्राप्त हुआ है। जहां पर भगवान स्वामिनारायण के कमलवत चरणो की रज विराजमानहै। पूर्ण भाव से याद करके धनुर्मास मागशर मास में प्रातः की धुन में बैठे तो इस धरती का प्रताप समझेगे तो देह का भाव भूलकर आत्मा की पहचान कर सकते है। तो ही परम ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है।

अपनेमन में रही हुई सभी कामनाओ का त्याग करेगे तो ही भगवतस्वरुप की प्राप्ति होगी। इस सभा मंडप में धुन में बैठकर निर्मल अन्तकरण से भगवान की प्रार्थना करेगे। तो परम पद की प्राप्ति अवश्य होगी। और हमारी नरनारायणदेव से यही प्रार्थना है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

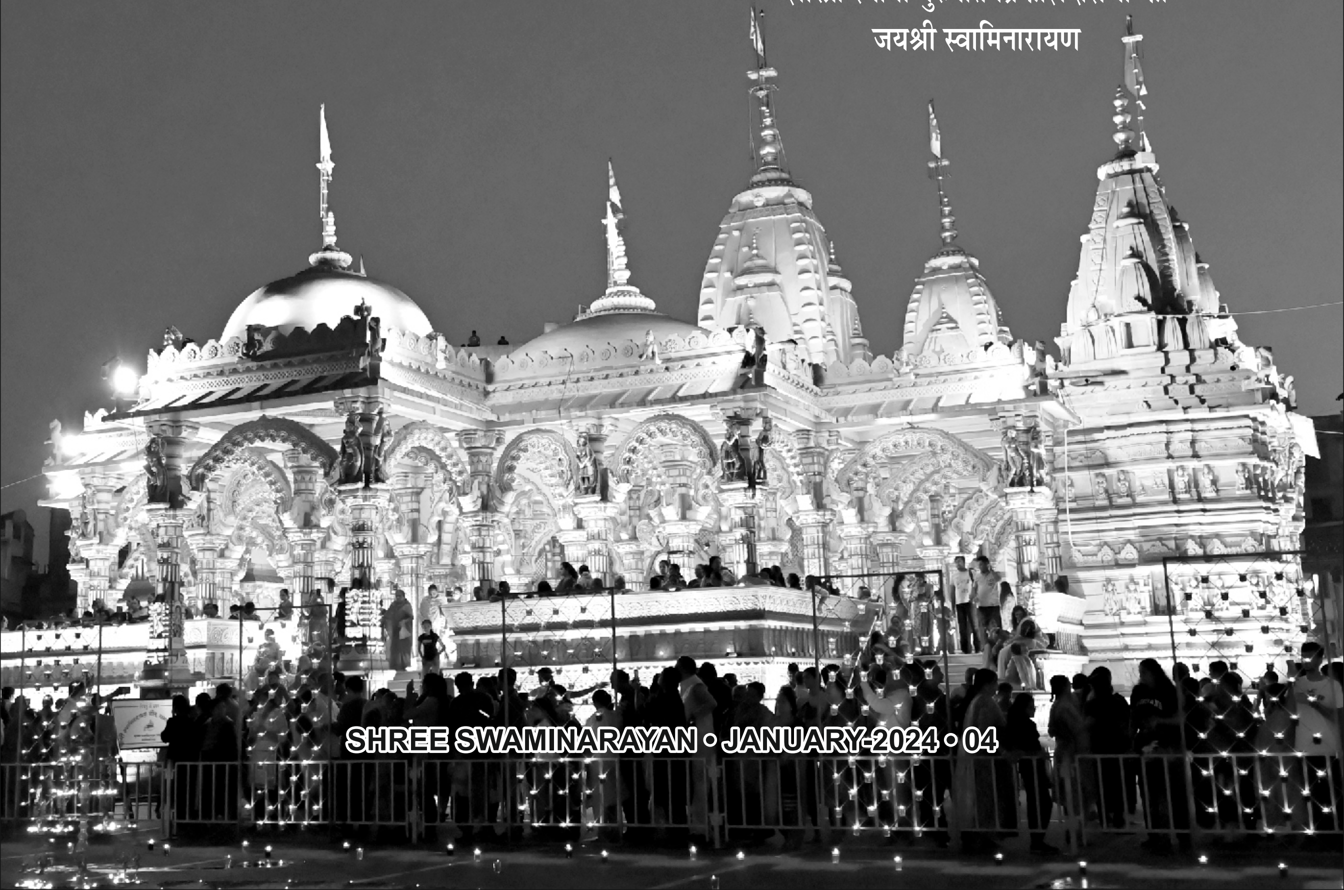

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (दिसेम्बर-२०२३)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
३ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) नवा वाडज मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये।
३-४ श्री स्वामिनारायण मंदिर दयापर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।
५ श्री स्वामिनारायण मंदिर परढोल मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।
११ श्री स्वामिनारायण मंदिर भाटेरा पाटोत्सव प्रसंग पर पधरामणी.
१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर समौ (हनुमानपुरा) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।
१४-१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) कथा पारायण के अवसर पर पधारना।
१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना। ओला (ता. कलोल) गाँव में कथा पारायण के अवसर पर पधारना।
१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईलोल (ता. हिंमतनगर) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
१९ सोजा (कलोल) गाँव में कथा पारायण के अवसर पर पधारना।
२० श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कनीपुर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (घनश्यामनगर) रजत जयंती पाटोत्सव महोत्सव के अवसर पर पधारना।
२६ अहमदाबाद कालुपुर मंदिर धनुर्मास के लिये धुनमें आना तथा मागसर मास के पूनम सभामां में पधारना।
३१ नवा निकोल नूतन मंदिर के लिये आयोजीत कथा के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसेम्बर-२०२३)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज (बहेनो का) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना। श्री स्वामिनारायण म्युझियम श्री नरनारायणदेव देश द्वारा आयोजीत शाकोत्सवनी मिटिंग स्वयं की अध्यक्षता में पूर्ण किये।
१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर समौ (हनुमानपुरा) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।
१५ धमासणा गाँव में प्रज्ञाचक्षु दम्पत्ति के समुहविवाह पर पधारना। श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
१७ निकोल मंदिर शाकोत्सव-पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
१९ सोजा गाँव में कथा पारायण के अवसर पर पधारना।
२१ माणेकपुर (घनश्यामनगर) मंदिर के रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।
२६ मूळी श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।
२९ शियाली (मूली देश) गाँव में पधारना, रात्रि में मोटेरा मंदिर कथा के अवसर पर पधारना।

“जेतलपुर का महल”

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

इ.स. १६१८ के वर्ष में दिल्ली के बादशाह जहाँगीर अहमदाबाद में आये थे । उस समय जहाँगीर का पुत्र शाहजहाँ अहमदाबाद शहर के सूबेदार पद पर शासन करते थे । बादशाह गर्मी बिताने के लिये अहमदाबाद में एकांत निश्चित किये । निवास करने के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य के साधन हो साथ शुद्ध वातावरण, वृक्ष बेल, वनराजी से पू र्ण उत्तम स्थान ९९९ नव सो निव्यानवे वीघा के विशाल सागर के समान दिखने वाली अहमदाबाद शहर के समीप देवसरोवर अखंड भारत में विश्व प्रसिद्ध था । जतीलपुर नामक गाँव उसके किनारे पर स्थित है । उस देव सरोवर के दक्षिणी किनारे पर शाहजहाँ सूबेदार अवकाश के दिनो में हवा खाने के लिये भव्य-विशाल शिल्प शास्त्र के नियमानुसार सूरज की किरणे उत्तरीहवा के साथ सम्राट की उचित सुरक्षा के साथ, परिवार तथा अन्य लोगो का समावेश हो सके । ऐसा ‘महल’ १६ वी शताब्दी में बनवाये थे । दिल्ली के बादशाह के भतीजे जहाँगीर ने जतीलपुर से प्रसिद्ध स्थल जेतलपुर नाम से प्रसिद्ध है । इस महल में आराम करने आते थे । प्राकृतिक सौन्दर्य, शुद्ध हवा से युक्त देव सरोवर के दक्षिण भाग में महल में निवास करने पर इतना अच्छा लगा कि वे महीने-महीने तक दिल्ली की गद्दी छोडकर दो वर्ष तक महल में रहे थे ।

एक दिन सूबेदार शाहजहां का जन्मदिन था । उसे मनाने के लिये जहाँगीर जेतलपुर महल में आये । साथ में काका और भतीजे भी थे । जेतलपुर में एक नर्तिका निवास करती थी । वह नृत्य कला में प्रवीण थी । बड़े बड़े धनवान शेठ, शाहूकार राजा-महाराजा, वडोदरा, मुंबई, जुनागढ, भावनगर, पाटण जैसे राजघराने में नृत्य किया करती थी । इस कारण से वह धनवान थी । शाहजहाँ के जन्म दिन पर नर्तिका का नृत्य देखकर बादशाह और सूबेदार खुश हुए । और नर्तिका ने पेश्वा के जन्म दिन पर खुश होकर ‘महल’ दान में दे दिया था ।

इस नर्तिका के परिवार में नृत्यकला वंश परम्परागत से पीढी दर पीढी आई थी । यह नर्तिका शुभ कार्यो में राजघराने में नृत्य करती थी । अपने भारतीय परम्परा में पुरुषो का मल्लयुद्ध तथा स्त्रीयो के नृत्यकला का आज भी सम्मान दिया जाता है.

विक्रम संवत १८६४ में आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान जेतलपुर में १८ दिन का अहिंसक यज्ञ किये थे । एक हजार हवन के कुंड थे । १८ हजार भूदेव पुरोहित, पद पर रहकर विष्णु यज्ञ किये थे ।

सद्‌गुरु निष्कुलानंद स्वामी भक्ति चिंतामणी ग्रंथ में लिखते है कि.

“धन्य-धन्य जेतलपुर गाम ।
जेने वाले कर्य निजधाम ॥
तेमा मरे पापी नरनार ।
ते पण न जाय जम ने द्वार ॥
तेमां परचा आप्या वाले बहू ।
जाणे चे जन मामना सहु ॥
मोटा मोटा कर्या जयां जगन ।
खुट्य नहि गोण घृत, अन्न ॥
एमां परचा आप्या पले-पले ।
ते तो केम लरवाय कागजे ॥”

जेतलपुर में गंगा माँ रहती थी । श्रीहरि उन्हे माँ कहकर बुलाते थे । वहाँ पर अनेक भक्त-दयाराम विप्र, नानाभाई विप्र, आशजीभाई, जीवणदास गंगादास मुखी, काकुजी क्षत्रिय प्रभुदास पटेल, शंकरदास पटेल, गंगुजी दरबार, पूंजाजी दरबार, भावसिंह दरबार नाथोजी दरबार, गगजी दरबार, रेवाबाई, राईबाई, जमुनाबाई आदि एकान्तिक सेवा के उपासक भक्त श्रीहरि की सेवा करते थे ।

विष्णुयज्ञ में भूदेव, भक्त, भूखो को भोजन के लिये दस हजार मण गेहूँ लाये थे । दूसरे सभी सामान इसी प्रमाण में लाये गये ते । गेहूँ पीसने का कार्य सबसे बड़ा था । श्रीजी महाराज विशेषकृपा करके वरदान दिये कि जो व्यक्ति एख तपेला गेहूँ पीसने का कार्य करेगा उसे हम अनंतकाल के लिये अक्षरधाम में ले जायेगे । इसके बाद जेतलपुर तथा आस-पडोस के लोग गेहूँ लेने के लिये कतार लगा दिये । पूरे क्षेत्र में आटा चक्की चलने लगी । प्रतिदिन हजार मण आटा आने लगा । आटे का ऐसा टीलाबन गया जैसे पहाड हो । उस समय पेशवा के मह लमें धनवान नर्तिका नाथीनाम की थी । उसे इस बात की सूचना मिली । वह इस अवसर का लाभ उठाने के लिये पू र्ण प्रयास की । वह गंगा मां के पास आकर गेहूँ ले गयी । रात भर अपनी आटा चक्की चलाकर आटा बना डाली । वह आटे का तसला लेकर देने आई । वहाँ की बहनोने आटा लेने से मना कर दिया । इसके बाद महाराज बोरसली के नीचे सभा करके बैठे थे । वहाँ दूर पर खडी होकर प्रणाम करके बोली हे हरि आप के वचनानुसार यह गेहूँ पीस कर मैं लायी हूँ । आप तो परमेश्वर हो । हमारी सेवा को स्वीकार करके मोक्ष का भागी बनाये । देखे यह आटा हमने ही तैयार किया है । मेरी सेवा स्वीकार कें । अधम करे उद्दारक पतित पावन श्री स्वामिनारायण भगवानने उसका पवित्र हृदय देखकर तसले में स्थित आटे को स्वीकार करके । परमहंसो के समान कल्याण हो ऐसे वचन बोले । बाई नाथी भक्ति से ओत-प्रोत होकर अपने महल मे आने के लिये श्रीहरि को न्यौता दी ।

सभी अवतारो के अवतार धर्मभक्ति के पुत्र परात्पर ब्रह्म भगवान श्री स्वामिनारायण परमहंसो वर्णी पार्षद भक्त भाई-बहन को लेकर देव सरोवर के पास आये । प्रसिद्ध महल में पधारे । नाथी ने पंचांग वंदना की दोनो हाथ जोडकर प्रार्थना की अब मैं भक्ति में लीन रहकर प्रेम पूर्वक भक्ति करने की संकल्प लेती हूँ । और कही हे हरे, आप भगवान है । सभी के नियंता है .आप के रुप में करोडो सूर्य का प्रताप मुझे दिखाई दे रहा है । आप ऋषियो और मुनियो के प्रिय है । एक हमारी प्रार्थना है । मैं अपने निवास को आप के चरणो में कृष्णार्पण करती हूँ । अब में सादगीपूर्वक एक पर्ण कुटी में रहकर आप की भक्ति-भजन करुंगी । अब यह सब हमारे काम के नही है । आप के दर्शन मात्र से जन्मोजन्म की ईच्छायो की पूर्णाहुति हो गयी है । आप हमेशा मेर महल में निवास करे । मैं गाँव में पर्णकुटी बनाकर भजन करुंगी । श्रीजी महाराज नाथी की पवित्र भक्ति देककर महल में सदैव निवास किये । उसी दिन के बाद जब भी श्रीहरि जेतलपुर पधारते थे । वहाँ पर विश्राम करते थे । गंगा माँ के घर भोजन करने आते तत्पश्चात फूलवारी में बोरसली वृक्ष के नीचे बैठकर सभा करते थे । इस महल के छत पर पंचमुखी शिवजी थे । उसे अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव ने प्रस्थापित किये थे । तब नरनारायण के बगल में पंचमुखी महादेव की श्रीहरि स्थापना करके, नीलकंठ महादेव जो आज भी महल में विराजमान है । उनकी प्रतिदिन सेवा जलाभिषेक श्रीहरि स्वयं करते थे । इस महल में श्रीहरि ३६८ दिन-रात निवास किये थे । महल के छत पर बैठकर जीवया भगत के मठ के रोटी को खाये थे । जेतलपुर के वचनामृत, जेतलपुर-१-४-५ महल के अमृत वचन है । इस महल में सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामीने शियाणी के शिवराम विप्र को सत्संगिभूषण शास्त्र की कथा सुनाये थे। यहाँ रहकर नंद संतो ने संस्कृत का अध्ययन किये थे । कभी किसी संत को असाध्य रोग हो जाने पर महाराज उसे जेतलपुर भेजते थे । जेतलपुर के भक्त रोगियो की सेवा के लिये हमेशा तैयार रहते थे । महल की हवा एवम् भक्तो की दवा से वह शीघ्र स्वस्थ हो जाते थे । श्रीहरि एकबार महल में सभा करके बोले की सुख-दुःख आये तब सभी लोग मिलजुल कर रहे। तो आगे अधिक सुख प्राप्त होगा । जो आप को मिला है अच्छा है।

इस प्रसादी के महल का प्रभाव उत्सव-प्रसंग शास्त्रो में पंजीकृत है । वह आज भी उसी अवस्था में सुरक्षित रखे है । श्री नरनारयणदेव के गद्दी के आचार्य परम्परा से अति आग्रह रहा है, प्रसादी के स्थान हो उसमें किसी प्रकार सुधार नही करे । मूलभूत अवस्था में बनाये रखे । आज भी वह महल प्रमाणरुप में स्थित है।

उस प्रसंग को सद्गुरु प्रेमानंद स्वामीने चार पद का कीर्तन बनाये है । ''महारे महोले आवो हसीने बोलावो रे रंग भीना धेलानंदजीना हो जी राज ।''

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृत वचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. महाराजश्री के ५१ वे प्रगटोत्सव के अवसर पर ता. २४-१०-२३ (विजया दशमी), प.पू. बड़े महाराजश्री : आदरणीय संतो और प्यारे सत्संगी भाईयो, अपने सम्प्रदाय में आचार्य पद सर्वोच्च पद होता है। इसकी गरिमा और महिमा जितना समझे उतना ही कम है।

मैं पच्चीस वर्ष का होने पर जब गद्दी पर आया तो मैं नित्य शाम को मंदिर आता था । अब प्रात: आता हूँ । जब मंदिर आने के लिये निकलता हूँ उससे पहले मेरी माताश्री बारी में बैठकर राह देखती है। मेरे बारी के पास से निकलते ही वह बारी में से पैर घूती थी । मै बोला ? आप यह क्या कर रही है। यह तो उळटी गंगा जैसी बात हो ? तब मातुश्री बोली ''मै तुम्हारा पैर नही छूती, तुम्हारे साफा को प्रणाम करती हूँ।

दूसरा मुझे याद है कि पू. बापुजी साफा पहनते थे । तो वे भी सर्व प्रथम साफा को स्पर्श करते थे । पैर झुकर साफा पहनते थे ।

पुरुषोत्तम प्रकाश में निष्कुलानंद स्वामीने अच्छे पद की महिमा गायी है । देश विभाग के लेख में महाराज ने अच्छे रुप से इस पद का निरुपण किये है।

देश विभाग के दो लेख है । एक बड़ा तथा दूसरा छोटा लेख है । बडे लेख को महाराज ने एक लेखक से लिखवाया था । तब जीराक्स मशीन नही थी । उस समय के संतो का नाम लेख में लिखा गया है । संतो का व्यक्तिगत हस्ताक्षर नही है। दूसरा जो छोटा लेख है। वह हमारे पास है। उस लेख की एप्लिका म्युजियम में भी है । उस लेख में नंद संतो की व्यक्तिगत हस्ताक्षर है।

सम्प्रदाय में जब विवाद होता है तो उस लेख को कोर्ट में साक्ष्य के रुप में रखा जाता है। इस लेख पर कोर्ट का सिक्का लगा हुआ है । इसके पश्चात दूसरे तीन शास्त्र सत्संगिजीवन, शिक्षापत्री और वचनामृत इन तीनो शास्त्रो को कोर्ट में **Exhibit** के रुप में रखा गया है।

एकबार एकनाइट अंग्रेज जज थे । अधिक विद्वान थे । उन्होने तलस्पर्शी अध्ययन किया था । तथा देश विभाग के आधार पर न्याय किये थे ।

दूसरी बात, जब आचार्य बदलते है । उदाहरण स्वरुप हमारे बाद विद्यमान आचार्यश्री इस पद पर आते हो ट्रस्टी रुप में नाम बदलता है । बराबर ? तो **Mode of Succession** (वंशपरम्परागत) चैरिटी आयुक्त के संविधान में इसका उल्लेख किया गया है। नाम किस लिये बदले ? हमारे स्थान पर यह ट्रस्टी क्यो आया ? तो चैरिटी में दो कारण लिखा जाता है । एक तो **Be cause of Nomination** (नियुक्ति के कारण) मैं इनको नियुक्त किया है । दूसरे तरफ देश विभाग का लेख है। तब चैरिटी में भी अपनी स्क्रीम के नीचे इस लेख के आधार पर व्यवस्था करना है ।ऐसा लिखित प्रस्तुत किया गया है।

सत्संगी मात्र देश विभाग का लेख और अ.नि. प्रो. हितेन्द्रभाई पटेल ''धर्मवंशी आचार्य पद'' की सुंदर पुस्तक लिखे है। से गहनता से पढे । यह एक बड़ा पद है।

आचार्य महाराजश्री यह पद अच्छी तरह से निभा रहेहै। यह धन्यवाद के पात्र है।

इनकी दो छोटी बाते बता रहा हूँ। ये अधिक छोटे थे । सेन्टझेवियर स्कुल में पढ रहे थे । उस समय का मित्र संजय सोनी जो अभी अमेरिका में रहता है। वह प्रतिदिन तिलक लगाकर विद्यालय में आता था । कभी दूसरे बच्चे मजाक करते थे । वह बात ये हमसे बोले उस समय लालजी महाराज बोले कौन है वह ? हमे बताओ । रास्ता निकालते है ।उसे समझा देते है।

दूसरी बात बताता हूँ। उस समय प्रो. शास्त्री हमारे घर इन्हे पढाने आते थे । एक बार शास्त्रीजी मुझे बुलाकर बोले ''यह लालजी महाराज क्या कह रहे है । आप को

बताये ? मैं यह बता रहा था कि गांधीजीका वाक्य है कि ''कोई हमे एक गाल पर थप्पड मारे तो हमे अपना दूसरा गाल भी उसकी तरफ कर देना चाहिए'' तभी लालजी महाराज बोले गलत बात है। वह पुनः दूसरे गाल पर भी मार देगा। हमें उसे सामने से दो थप्पड मारना चाहिए। तो अच्छी बात है। समय के अनुसार महाराजने इन्हे रखा है। क्योकि यह संस्था महाराज की है। **Appointment** वही करते है। गदग्दी पर बैठाकर उन्होने आरती उतारी है। समयानुसार गद्दी पर बैठने वाले को सिखाकर महाराज भेजते है।

आज के अवसर पर अधिक आनंद प्राप्त हुआ। आप का स्वास्थ्य अच्छा रहे। चिरकाल तक सत्संग की सेवा करते रहे। ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करके विराम लेता हूँ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : शहर तथा अहमदाबाद देश के सभी गाँवो से देश-विदेश से इतने अधिक संख्या में हरिभक्त और प्रत्येक संत महाराजश्री के जन्म दिन की शुभेच्छा देने के लिये आये है। इस समय पी.पी. स्वामीने अच्छी बात किये कि आठ वर्ष से महाराज परिश्रम कर रहे है। जो हम सभी देख रहे है। इतने कम समय में अपना सम्प्रदाय देश विदेश में प्रगति कर रहा है। ये धन्यवाद के पात्र है। साथ ही साथ हरिभक्त एवम् संत अपना लगाव रखकर सत्संग का विकास किये है। जो प्रसंन्नताकी बात है। हम अधिक निक टसे देखे है। सत्संग ही हमारा परिवार है यह विचार से हमेशा आगे रहा है।

आज के दिन पर आप सभी संत-हरिभक्त क्या भेट देगे ये यह सत्संग के लिये संकल्प और प्रोजेक्ट है। आप सभी को ज्ञात ही है। छपैया में बड़ा प्रोजेक्ट चल रहा है। नारायण सरोवर से लेकर जन्म स्थान का जीर्णोध्धार हो रहा है। इसमें की हरिभक्त अच्छी सेवा दिये है। यहां पर उपस्थित छोटा-बड़ा संकल्प ले। क्योकि छपैया स्वामिनारायण की जन्म स्थली है। सम्प्रदाय का प्रारम्भ छपैया से ही हुआ है। छपैया सम्प्रदाय का प्रमुख स्थान कहा जा सकता है। इस संकल्प को देश-विदेश में दे तो अच्छी बात है। यह महाराज के लिये भेट मानी जायेगी।

आज के दिन महाराज के चरणो में प्रार्थना है कि महाराजश्री का स्वास्थ्य अच्छा रहे। नरनारायणदेव की सेवा का पूर्ण अवसर मिले। इसी प्रार्थना के साथ विराम लेता हूँ।

प.पू. महाराजश्री : बापजी ने जब बात प्रारम्भ की तो मुझे चिंता हो गई कि यह रुके तो अच्छा। रुपया हो पर छूटक होता है। आप हँस रहे है। लेकिन सत्य कह रहा हूँ अपना पालने से देव के प्रति निष्ठा है। स्वरुप निष्ठा उपर से देवेन्द्रप्रसादजी महाराज, वासुदेवप्रसादजी महाराज, सात पीढी से यही आ रहा है। यही आना भी है। समयानुसार प्रकार बदल सकता है।

गाँवो से देश से संत-हरिभक्त मुझे **Message** करते है। तो ये लोग देव से जुडे है। इसलिये मोबाईल हाथ में लेते है। वास्तविकता तो यह है कि यह कोई व्यक्तिगत वस्तु नही है। यह सिर पर साफा पहने है उसका परिणाम है।

बापजीने जो कहा वह बात गहरी है। यह साफा पहनने के लिये पात्रता खूब.... पता नही.... शब्द छोटा पड जायेगा। लेकिन यह पात्रता भगवान देते है। कोई कला इसके लिये नही बन सकती है। भगवान की ईच्छा होने पर आगे जा सकते है। देव का कार्य कर सकते है।

गाँव से कोई हरिभक्त आता है। बैठता है। सुख-दुःख की बात करता है। यह बात करने का स्थान है। इस लिये करते है। छोटे बच्चे से लेकर वृद्ध तक उसका हृदय स्थित हो और भगवान पारायण हो तो वह सफल दिवस है। ऐसा हम मानते है। शेष संसार में यह चलता रहता है। तकलीफ कई लोगो को है। कोई सम्भालने वाला है कोई ? आप अपना कष्ट प्रस्तुत करो। तो ठीक है। ऐसा कह कर चल देते है। लेकिन यहाँ पर जो संत, हरिभक्त और हम आपस में बात सुतने है। और भगवान की दया से निराकरण भी होता है। यह देव का प्रताप है।

कहाँ से, कौन, कैसे सम्बन्ध बनता है। यह निश्चि नही होता है। मै तो अपने को भाग्यशाली मानता हूँ। मुझे अधिक मिला है। मै अलग-अलग उम्र वालो को अंतर से पहचानता हूँ। चाहे वह संत हो, हरिभक्त हो, आर्किटेक्ट, डॉक्टर राजनीतिक या विदेश के लोग हो। इसका कारण व्यक्तिगत नही है। ये देव है। एक लक्ष्य रखकर जीवन व्यतीत करता हूँ।

लालजी महाराजश्रीने छपैया के संकल्प की बात किये । तो छपैया तो छपैया है । हमे एक केटेलेस की तरह कार्य करना है । आप सभी ने सहयोग दिया है । यह हमारी ज्मिेदारी है । और हरिभक्त तो करेगे ही ।

अहमदाबाद का प्रोजेक्ट हो । या गाँव का प्रोजेक्ट हो । ये सब अपने ही प्रोजेक्ट है । क्योकि देव अपने ही है । इस देव के अर्न्तगत जितने भी मंदिर है संत है । हरिभक्त हो सभी अपने ही है ।

कुछना कुछ निमित्ते होता है । १९९४ मे बापजी का ५० वर्ष पुरा हुआ । और् गद्दी का २५ वर्ष पुरा हुआ । इस अवसर पर रजत-स्वर्ण जयंती को मनाना । इससे पूर्व दो वर्ष गांव तथा १०० दिन विदेश का भ्रमण किये थे । साथ में बड़े पी.पी. स्वामी, नारायणवल्लभ स्वामी, हरिकृष्ण शास्त्री इत्यादि संत थे । मस्कत जाना हुआ । इससे धन जो बचा छपैया के निजमंदिर संगमरमर का पत्थर यहाँ से प्रबन्ध हो गया था । इसमे देव की प्रधानता है । हम ऐसा नही कर सकते है । इसे न्याय नही दिया जा सकता है । **Equity** (न्याय-नीति का सिद्धान्त) इन सम्प्रदाय की, इस सत्संग की, नरनारायणदेव गद्दी की गरिमा बडे ऐसा काम करे ।

अब ऐसा नही रहा । ऐसी गरीब वाली बात नही करनी चाहिए । ऐसी बात करने वाले को जेतलपुर, नारणपुरा या नारणघाट में प्रसादी खाने को मिले तो भी उपवास करे । पहले जैसे नही रहा ऐसा विचार आये तो घर पर भी भोजन नही करे । यह सत्य कह रहा हूँ । बहनो को संतुष्ट करे की भोजन नही दे । भले बाहर खाखरा खाये । पहले जैसे क्यो नही रहा ? देव पहले जैसे नही ? ये संत सब कुछ त्यागकर यहाँ बैठे है । यहे पहले जैसे नही है । आप समय निकालकर बैठे है ये पहले जैसा नही है ? मुझे तो समझ में नही आता है । आप यहाँ बैठे है । आप ऐसा नही बोले, लेकिन समूह कहता है । ये उनकी बात है ।

देव तो प्रत्यक्ष है । लेकिन नजरे फिर गयी तो सब कुछ बदल जायेगा । देखने की प्रक्रिया घुमती है । इस लिये सब कुछ, बदलता है । संसार वैसा ही है । सतयुग में भी राक्षस थे । आज कुछ कम है । उस समय डांईग से सीग-पूछ, दिखाया जाता था । आज ऐसा नही है । युग बदलता नही, दिमाग में से युग बदलता है । यह वचनामृत की बात है ।(सा.-७)

सम्प्रदाय की प्रगति हुई है । हो रही है, और होती भी रहेगी । इस लिये मैं दृढता से मानता हूँ यह भगवान के बल से मानता है । इस लिये खराब नही बोलना है । भगवान पर विश्वास रखे । भगवान का नाम आने पर सारी बात समाप्त हो जाती है ।

यह परिवार मिला है । यह बड़ी बात है । यहाँ से (प.पू. बापजी) से प्रेम मिला है । हवेली से प्राप्त होता है । कष्ट सभी को मिलता है । संतो को भी मिलता है । चेला लोग कुछ जगह पर संत के कहने पर भी नही जाना चाहते है । यह दम्भ के बिना मजाक वाली बात कर रहा हूँ । आप को एक सप्ताह के लिये बाहर जाना पडे तो क्या होगा ? हमारी तरह प्रवास करने पर तो कुछ लोगो को सम्बंध विच्छेद हो जायेगा । गादीवाला हो या मातुश्री हो सभी को भगवान निश्चित करके लाते है । यह सहनशीलता, त्याग, वैराग्य, बच्चे बच्चियो को संस्कार देना । यह परिवार का एक बड़ा बलिदान ही है । जो मै तीन पीढीयो से देख रहा हूँ । गादीवालाश्री बच्चो को जब सम्भालती है । तभी हम कच्छ जा सकते है । प्रारम्भ घर से होता है ।

यह परिवार तथा इसके बाद आप परिवार कितना त्याग करते है ? मुझे फोन करने के लिये कोई खाली नही है । फिर भी आप को फोन उठाने का मन करता है । अर्थात् ये हरिभक्त की सरलता और प्रेम देते है । तो हम कहाँ जायेगे ? लेकिन माफ करे लाइव है और सार्वजनिक रुप मे कहता हूँ कि उत्तर नही दे सकते है । क्योकि संख्या बढ रही है । देव के हरिभक्त बढते जा रहे है । यह देव के कारण ही हो रहा है ।

अभी सिद्धेश्वर स्वामीने कहा है कि एकावन शब्द मे वजन आता है । अर्तात् वन में जाना वन में जाए ऐसा नही है त्याग की परिभाषा यह है कि हिमालय में जाकर अकेले रहना है । यह त्याग की परिषाभा नही है । लेकिन भीड मे रहकर हिमालय को अंदर रखना ये सच्चा त्याग है । वन में गाँव में इकड्डा करके त्यागी नही बन सकते है । यह

सत्य है।

महाराज के वन विचरण के समय की बात है । आपको तो ज्ञात ही होगा । वन विचरण में वुटोलपुर से आगे रास्ते में मातारीपुर नाम का एक गाँव आया है। वहाँ का राजा लालची था । स्वर्ग सिद्धि के लिये कई भेषधारियो को रखते थे । महाराजने उसका अज्ञान दूर किया। मोक्ष का उपाय बताये थे। राजा का भाव देखकर महाराज वहाँ दो वर्ष तक रहे थे। जाते समय राजाने एक बाबा की बात कही कि हमारे गुरु नजदीक के वन में रहते है। जो भूयरा में रहते है। वह अन्न-फल भी नही खाते है। आज भी कई लोग इसी तरह की बात करते है। फल हमारे गुरु भूयरा से बाहर आयेगे । और पूनम तक बाहर रहेगे । शरद पूर्णिमा को कारण हजारो भक्त वहाँ पर आये है। मै भी दर्शन करने के लिये जाता हूँ। आप गुरु से मिलकर अवश्य वापस आये। १२ महीने में एक बार दर्शन देते है।

महाराजने कहा कि क्या आप के गुरु अन्न, जल, बिना जीवित रहते है। वह केवल सम्मान से जीते है। यदि आप को परीक्षा लेना है तो चौकीदार की व्यवस्था करके रखे। ताकि कोई आदमी वहाँ नही जाये। यदि मनुष्य का दर्शन नही होगा तो वह मर जायेगे। राजा ने परीक्षा लिया गुरु भूयरा में से आये। पूनम तक रास्ता देखे कोई व्यक्ति वहाँ पर आया ही नही। वह निराश होकर मर गये। राजा को श्रीहरि का आभास हुआ। इस लिये श्रीरि के आश्रित हो गये।

ये बाबा लोगो के लिये जन्म लिये । सम्मान के लिये जीते थे । हमें देव के अलावा किसी का रास्ता नही देखना है। मेरा भी नही मै तो पोस्ट मैन हूँ। चिठ्ठी ईधर से उधर करता है। एकावन होगा। बावन होगा। यह तो होता रहेगा। जो होगा वह देव के नाम से होगा। और देव के लिये होगा।

ये हरियाली और फूलो को छोडकर वन में जाऊ। ऐसा नही है। मै मानसिक रुप से कमजोर मनुष्य नही है। बन भी किसी को भेज दूं। अभी तो बापजी ने हमारा परिचय करवाया है। जैसा हूँ वैसा दे दिये है। अब तो स्वतंत्र रुप से आ गया हूँ। अच्छे से अच्छे को वन में भेज दूँ। जो भगवान का नही है। जो बदमाशी कहा। उसे अवश्य भेज दूंगा। इसलिये चिंता नही करे। सूची भेजते रहे। दो-चार को तो भेजा है। आप को तो पता ही है।

आने वाले वर्षो में मंदिरो के पाटोत्सव के लिये लालजी महाराज को ले जाये। यदि २०-२५ वर्ष का बड़ा उत्सव हो तो मै अवश्य आउगा। प्रतिष्ठा करुगा। क्योकि यह हमारा धर्म है। कष्ट तो यह है कि गाँव में उत्सव रहने पर गाँव वाले भोजन बनाने में व्यस्त रहते है। वरघोडा निकालना बंद कर दिया। डायरी में सूची वद करना छोड दिया। विना लिखे एक दिन पहले आ जायेगे। सत्य होगा वह पास आयेगा। ऐसे स्थल पर जायेगे। जहाँ पर १०-२० वर्ष से गये ही नही है। वहाँ पहले जायेगे। हरिभक्त कितने है। यह नही देखना है। ये भगवान के भक्त है। मंदिर है। भगवान है तो जीव का भला होगा।

५० वर्ष पर निवृत्ति का विचार था । लालजी महाराजने दो वर्ष की कृपा की है। **Grace Period** अब परदे के पीछे रहकर काम करेगे। यह तो हमारी सोच है। शेष महाराज के कृपा से होगा। मारी मरजी विना रे कोई थी तरउं नव तोडाय। हमसे तो चारपाई का एक पैर भी सीधी नही होता है। पूरी दुनिया को सुधारने जायेगे। तो यह नही हो जायेगा।

नरनारायणदेव का आश्रय है। अनुभव पालने मे मिला है। बस भगवान का होकर रहे। यही हमे करना है। दूसरा क्या करना है?

प्रत्यक्ष एकत्र हुए है। देश-विदेश से मेसेज आया है। आप सभी को परिवार के साथ नरनारायणदेव सभी को खुश रखे। नरनारायणदेव सदैव हम लोगो के साथ रहे। और हरियाली में वृद्धि होती रहे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना।

પૂનમ સત્સંગ સભા

માગસર સુદ-૧૫ પૂનમની સત્સંગ સભાના યજમાનશ્રી અ.નિ. નારાયણભાઈ ખુશાલદાસ પટેલ પરિવાર (મોખાસણવાળા), પ.ભ. રમેશભાઈ નારણભાઈ પટેલ, પ.ભ. વિનોદભાઈ નારણભાઈ પટેલ, પ.ભ. અશ્વિનભાઈ નારણભાઈ પટેલ, નારાયણ ડેવલોપર્સ, ગોમતીબેન ગોપાલભાઈ પટેલ - વડુ - અમેરિકા

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री अभिषेक की सूची-दिसेम्बर-२०२३

ता. ०३-१२-२०२३ प.भ.श्री चंद्रेशभाई हसमुखभाई सोनी।
ता. ०८-१२-२०२३ प.भ.श्री ऋत्विक जयेशभाई गज्जर - नारणपुरा - विवाह के अवसर पर।
ता. १०-१२-२०२३ अ.नि. श्रीमती काश्मीराबेन उदयनभाई महाराजा - विसनगर।
ता. ११-१२-२०२३ प.भ.श्री हसमुखभाई शंकरलाल भावसार - वडनगरवाला-घाटलोडिया।
ता. १७-१२-२०२३ श्रीमती मीताबेन भरतभाई पटेल - नारणपुरा।
ता. १९-१२-२०२३ प.भ.श्री प्रियेश विरजी खेताणी - सिडनी ओस्ट्रेलीया।
ता. २४-१२-२०२३ प.भ.श्री महेशभाई लालजीभाई ठक्कर - आंबावाडी।
ता. २६-१२-२०२३ प.भ.श्री हितेन्द्रकुमार विष्णुभाई पटेल - राणीप।
ता. २८-१२-२०२३ प.भ.श्री सविताबेन चंदुलाल पटेल - अहमदाबाद।
ता. २९-१२-२०२३ प.भ.श्री घनश्यामभाई शंकरलाल बेचरदास पटेल - मोखासणवाला-सोला।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-दिसेम्बर-२०२३

रू।.५१,०००/- प.भ.श्री डाह्याभाई नारायणदास पटेल (माणसावाला)।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।
સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

धर्मकुल के पधरामणी के लिये हरिभक्तो को महत्वपूर्ण सचन

सभी हरिभक्तो को अवगत किया जा रहा है कि अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की सत्संग के किसी स्थल पर पधरामणी की तारीख प्राप्त करने के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर प्रत्येक एकादशी, पूनम के दिन आये उसी दिन प्रसंग की तारीख कार्यक्रम के लिये साक्षात् मिलकर समय प्राप्त करे। उपरोक्त कार्य के लिये कोई भी पू. महाराजश्री के बंगले पर श्री स्वामिनारायण बाग पर नही जाना है। जिससे सभी लोग अवगत हो।

सम्पर्क : कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी - मो. : ९९०९९७६००९

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के पधरामणी के विषय में सूचन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के पधरामणी की तारीख प्राप्त करने के लिये बहने कालुपुर मंदिर के हवेली में सांख्ययोगी बहनो से सम्पर्क करे। उपरोक्त कार्य के लिये कोई भी श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर नही जाये। जिस पर सभी बहने ध्यान दे।

॥ निमंत्रणम् ॥

સમગ્ર ધર્મકુળનાં સાંનિધ્યમાં
શ્રી નરનારાયણદેવ દેશનો સંયુક્ત

॥ શાકોત્સવ ॥

રવિવાર તા.28-1-2024

સ્થળ:- “પર્વ”ગ્રાઉન્ડ, જમીયતપુરા,અમદાવાદ

अवतीर्य निजाक्षरात्परादिह मूर्त्यां बदरीवने स्थितः ।
भुविभारतजीवशर्मणे नरनारायणदेव पाहिमाम् ॥

ધર્મકુળ આશ્રિત પ.ભ.શ્રી

સર્વાવતારી શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને મુમુક્ષુઓને જીવન જીવવામાં આશીર્વાદરૂપ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય તેવા શુભ હેતુથીગુજરાતનાં ગામોગામ સત્સંગ કરાવ્યો અને તે સત્સંગને પોષણ મળી રહે તેવા હેતુ થી વારંવાર ઉત્સવ સમૈયા કરી સત્સંગને નવ પલ્લવિત રાખતા. આવા વિવિધ ઉત્સવોમાંનો એક ઉત્સવ લોયામાં શાકોત્સવનો કર્યો હતો. તે શાકોત્સવનું મહત્વ એટલા માટે વધી જાય છે કે તેમાં શ્રીજી મહારાજે છપિયાથી સૌ પ્રથમવાર ધર્મકુળને તેડાવેલ. વળી મૂળી શ્રી રાધાકૃષ્ણદેવની મૂર્તિની આરતી પણ શ્રીજી મહારાજે ત્યાં ઉતારી હતી. શ્રીજી મહારાજે સ્વયં સંતો હરિભક્તો માટે બનાવેલ શાકની દિવ્યતાની તો કલ્પના જ કરવી રહી. તેથી જ તે ઉત્સવમાં કેટલા કિલો ઘી કેટલાય કિલો રીંગણ વપરાયા હશે તે બાબત ગૌણ બની જાય છે.

આવા ઉત્સવને અને તેની દિવ્યતાને સ્મરણ કરવાનો અવસર સમગ્ર અમદાવાદ દેશના સંયુક્ત શાકોત્સવમાં તાદશ્ય થશે. તેથી શ્રી નરનારાયણ દેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની શુભ આજ્ઞાથી તેમજ પ.પૂ. મોટા મહારાજ શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી, ભાવિ આચાર્ય પ.પૂ. ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી એવમ્ સમગ્ર ધર્મકુળના સાંનિધ્યમાં તા. ૨૮-૦૧-૨૦૨૪ને રવિવારના રોજ ભવ્ય શાકોત્સવનું આયોજન કરવામાં આવ્યુ છે.

આ પ્રસંગે લાભ લેવા પધારવા આપ સૌને મિત્રમંડળ સહિત નિમંત્રણ પાઠવીએ છીએ.

-: નિમંત્રક :-
સ.ગુ. મહંત શાસ્ત્રી સ્વામી પુરૂષોત્તમપ્રકાશદાસજી
તથા સર્વે સંત મંડળના ખૂબજ હેતપૂર્વક જયશ્રી સ્વામિનારાયણ

॥ મંગળ કાર્યક્રમ ॥

શાકોત્સવ પ્રારંભ : સાંજે ૪-૦૦ કલાકે
સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ : સાંજે ૬-૩૦ કલાકે

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર,અમદાવાદ એક

લાઈવ પ્રસારણ www.swaminarayan.in અને કાલુપુર મંદિરની ચેનલ પર

સર્વોપરિ ધામ છપિયામાં પ.પૂ.ગાદીવાળાશ્રીની નિશ્રામાં સત્સંગ શિબિર, પદયાત્રા અને પારાયણ

छपिया मन्दिर

॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा में (कालुपुर मंदिर हवेली) "हमे ज्ञानी जैसा बनना है ।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

इतना अधिक महाराज के लीला चरित्र को सुनने के बाद क्या कहना ? भोजन करने के पस्चात मिठाई का खाना, इसके बाद खाने का मन कुछ कहेगा ? भगवान के चरित्र को सुनकर कुछ कहना बाकी नही रहता है । इस पारायण के जो यजमान बने है । उन्होने पूरा लाभ उठाया है । तथा सभी को लाभ दिये है । मुझे भी अच्छा लाभ मिला है । यज्ञ में बैठना हुआ । राजोपचार हुआ । जो हम सभी यहाँ पर बैठे है उनको भगवान ने चयनित किया है । इस लिये हम सभी यहाँ पर बैठे है । हम कईबार इस बात को कहते है । लेकिन सिद्धान्त रुप मैं देखे तो हम जिस भरत खंड में रहते है । उसके राजा नरनारायणदेव है । इस भरत खंड में करोडो लोग रहते है । लेकिन सभी को नरनारायणदेव के सानिध्य में बैठने का अवसर नही मिलता है । हम सभी को इसका लाभ मिला है । इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है । सत्संग में यह भगवान का निमंत्रण पत्र है । भगवान साक्षात् कभी निमंत्रण पत्र देने नही आते है । आप सत्संग में आये । अर्थात् भगवानने आप को प्रेरित किया है । इस प्रकार भगवानका धन्यवाद कहना चाहिए । भगवान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहिए । क्यो कि ? जितनी बार कथा में भाग लेगे । तब सुख-कष्ट भूल जाते है । सबके घर में प्रश्न होता है । लेकिन अपना दुख छोटा है । कार्य व्यक्ति १००% सुखी नही है । सुख-दुःख सबके पास है । लेकिन अपने पास यह सब होते हुए । नरनारायणदेव है । जो सबके पास नही है । इस प्रकार हम सभी विशेष है । इस लिये अपना पलडा भारी है । मायारुपी जगत में हम सभी है । दुःख तो आयेगा । लेकिन अपने पास नरनारायणदेव है । इस लिये दुःख परेशान नही करेगा । अपने प्रारब्ध में यदि दुख लिखा है तो भगवान उसे कम कर देते है । कम न भी हो तो सहनशक्ति में वृद्धि करते है । रास्ता बताये है । इस लिये अपना पक्ष भारी रहता है । मंजुबाने १००% सही बात कही है । आज कल सभी लोग अपने को भगवान के समान समझने लगे है । भगवान बनने का प्रयास करते है । भगवान की तरह लीला करते है । उसे लीला न कहकर ढोंग कहा जाता है । महाराज शिक्षापत्री में कहे है । कि श्रीकृष्ण भगवान तथा श्रीकृष्ण भगवान के जो अवतार है । वह ध्यान करने योग्य है । कृष्ण भगवान की प्रतिमा का ध्यान करे । यदि मनुष्य कृष्ण का भक्त हो या ब्रह्मवेता हो । वह ध्यानक रने योग्य नही है । शिक्षापत्री श्लोक ॥११५॥ भगवान के समान एक ही भगवान होते है । भगवान जैसा कोई नही । भगवान के एक चरण के नख के रजकण के बराबर कोई नही है । इस लिये ध्यान से ध्यान करना है । भगवान का ध्यान करने बैठे तो दूसरे का ध्यान नही होना चाहिए । हम माया के प्रभाव में रहते है । ध्यान में चित्र की वृत्तियाँ भटकती है । यह स्वभाविक भी होता है । इससे गभराना नही है । दीन-दीन होकर नही बैठना चाहिए । एक सभा में जाना । एक होमात्मक यज्ञ कर लिया । माया से पार हो गये । ऐसा नही समझना चाहिए इसका प्रभाव धीरे-धीरे होता है । धीरे-धीरे आत्मबल बढता है ।

ज्ञान, बुद्धि, विवेक धीरे धीरे बढता है । गृहस्थ रहकर वैरागी हो सकते है । आया जहाँ पर बैठ है १००% दे । जैसे अभी आप सभी कथा में आये है । यहाँ पर पूर्ण रुप से उपस्थित रहे १००% भाव रखे । तो सफलता अवश्य मिलेगी । नही तो सब व्यर्थ हो जायेगा । गृहस्थ आश्रम में रहकर वैरागी की तरह व्यवहार करे तो विवेक आता है । आप का ज्ञान बढता है । हम वैरागी जैसे बनते है । अपना जो कर्तव्य है । व्यवहारिक,

सांसारिक जिम्मेदारी है । वह अच्छे से निभा सकते है । ऐसा आत्मबल आता है । आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ते है । ज्ञानी-अज्ञानी में अंतर क्या है । ज्ञानी के मन में चिंतन, मनन, तर्क, वितर्क होता है । लेकिन वासनाओ की कमी होती है । इस लिये वह आसक्त नही होता है । अज्ञानी के मन में वासना की प्रधानता होती है । क्योकि चौरासी लाख योनि में हमे एक बार अवसर मिलता है । उसे व्यर्थ नही करना चाहिए । ८३,९९,९९९ जन्मो के बाद यह मानव जन्म मिलता है । ऐसा करने की हिम्मत है । हमारे में ?

गंगासती के भजनमें आता है । और अच्छा भी है ।

बीजली ना चमकारे मोडीता परोवी ल्यो
अचानक अंधारा थाशे रे...

छपैयाधा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के सानिध्य में सत्संग शिबिर

सम्प्रदाय का सर्वोपरि धाम श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया में ता. २५-१२-२०२३ से २७-१२-२०२३ तक अपने प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में सुंदर महिला सत्संग सम्मेलन का आयोजन किया गया था । ता. २५-१२-२३ से ता. २७-१२-२३ तक श्री घनश्याम बालचरित्र की अद्भुत कथा सांख्ययोगी बहनो के वक्ता पद से पूर्ण हुआ । दिनांक २८-१२-२३ के दिन छपैया धाम में स्थित बाल घनश्याम के प्रसादी के तीर्थो की पदयात्रा प.पू. गादीवालाश्री के देखरेख में की गयी । जिस में ८०० जितनी बहनें पैदल यात्रा में भाग लिया था । प.पू. गादीवालाश्री मंदिर में धनुर्मास धुन के हेतु जितने दिन रुकी थी । उतने दिन शीघ्रता से धुन में भाग लिये थे । सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ जिसकी कोई उपमा नही दे सकते है । ऐसे अलौकिक तीर्थ में सत्संगी बहनो ने पू. गादीवालाश्री को महासुख देकर अत्याधिक खुश किये थे । छपैया मंदिर द्वारा अच्छी व्यवस्था की गयी थी ।

जोत रे जोता मां दिवसो वीया रे गया,
२१६०० नी काण थाशे रे...

२१६०० की ''बात'' अर्थात् वैज्ञानिक रुप से देखे तो मनुष्य प्रतिदिन २१६०० बार श्वास लेता है । जैसे-जैसे दिन वितता है । अपना एक-एक दिन काल के मुख में जाता है । अपने आयु में से एक-एक श्वास समाप्त हो रहा है । हम कल पर सोचते है । लेकिन अवसर आज का है । इसका उपयोग अच्छा माना जाता है ।

आज जनतबा के चरित्र को सुनकर सभी को आनंद आया होगा ? चेष्ठा के पद भी सभी सांख्ययोगी बहनोने अच्छे उदारण से समझाई है । अब इसे याद करने की आवश्यकता भी नही है । स्वयं याद हो गया है । ऐसी अच्छी भगवान के लीला चरित्र सुनाये । आप सभी लोगो को मिले है । तो आज के दिन भगवान के चरणो मैं यही प्रार्थना है कि आप सभी का ''आत्मबल'' महाराज अधिक बढाये ।

नवनियुक्त महंत स्वामीश्री
श्री नरनारायणदेव के नये पूजारीश्री की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के श्री नरनारायणदेव के नये पूजारी के रुप में स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी घनश्यामप्रकाशानंदजी गुरु ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी और स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी गुरु ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी की नियुक्ति की गई है।

●

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर स.गु. शास्त्री स्वामी श्री दिव्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट मंदिर के महंतश्री) को नियुक्त किया गया है ।

●

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री व्रजभूषणदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर-अहमदाबाद) मंदि रके महंतश्री) को नियुक्त किया गया है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धनुर्मास की धुन महोत्सव

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू.महंत स्वामी सद् शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा औरमार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के पवित्र सानिध्य में ता. १६ दिसम्बर २०२३ से १४ जनवरी २०२४ तक लगातार एक माह तक जीवप्राणी मात्र को महासुख देने वाले अलौकिक महामंत्र ''श्री स्वामिनारायण'' की धुन प्रातः ५ बजे रंगमहल श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख इसके बाद प्रसादी के सभा मंडप में ५-३० से ६-४५ तक किया जाता है। ठंडी के ऋतु में छोटे-छोटे बच्चे, भाई-बहने और वयोवृद्ध हरिभक्त पूरे मास धुन का लाभ उठाये थे। पूरा सभा मंडप मानव वमेदिनी से पूर्ण रहता है। इसी प्रकार हवेली में भी प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के शुभ निर्देश में सांख्ययोगी बहने और सत्संगी बहने हजारो की संख्या में धुन का अलौकिक लाभ लीथी । प्रतिदिन धुन में भाग लेने वाले हरिभक्तो की भगवान को चढाये गये प्रसाद का वितरण किया गया। जिस में मिठाई को सुंदर प्लास्टिक के डिब्बे में दिया गया था। मासिक धुन करने वाले हरिभ्कतो को दो बड़े प्लास्टिक के बोक्स में अडदिया-मगस का २ कीलो प्रसाद दिया गया था। पूरे महीने के लिये श्रद्धालु प्रेमी देवधर्मकुल के प्रति निष्ठा वाले लोग यज्ञ का यजमान बनकर लाभ उठाये थे। यह सेवा अधिक मेहनत चाहती है। प्रतिदिन घंटो तक प्लास्टिक के बाक्स में प्रसाद रखना प्रसाद बनाना आदि की सेवा पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में पू. स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी (जे.पी. स्वामी) औऱ भंडारी स्वामी पूरे महीने आराम नही किये थे। उनके प्रति धन्यवाद कम है। प्रतिदिन धुन में हरिभक्तो की टीम प्रसाद वितरण में सुंदर सेवा किये थे। हजारो हरिभक्तोने पूरे मास की धुन मोक्ष के लिये किये थे। दैनिक धुन हजारो की संख्या में की गयी थी।

हजारो की संख्या में भाई-बहन पूरे मास धुन का लाभ लेकर जीवन कृतार्थ किये थे। पूज्य संत भी धुन में औऱ तन और धन से सेवा किये थे। श्री नरनारायणदेव के छोटे-बडे प्रत्येक मंदिरो में धनुर्मास की धुन वर्षो से की जा रही है। इस साल का धनुर्मास ऐसा था। जिसे स्थाई तौर पर याद किया जायेगा। पूरा मंदिर बिजली के प्रकाश से प्रकाशित किया गया था। अलौकिक प्रसाद सभा में किसी को रुकावट न हो। ऐसी व्यवस्था की गयी थी। आऱती, दर्शन में कोई तकलीफ नही थी इस पर ध्यान दिया गया था। पूरे मास प्रसाद की सेवा देने वाले यजमानो का सुंदर नाम के बेनर सभा मंडप में लगाये गये थे। मासिक धुन करवाने वालो को नाम फ्लेक्स कलर बैनर सभा मंडप में नाम के साथ लगाया गया था। इस सुंदर प्रबन्ध को प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा प्रेरणा से अपने पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से उनके संत मंडल टीम द्वारा किया गया था। ऐसे पूजनीय संत धन्य है। जिनके हृदय में लगातार सत्संग की वृद्धि तथा रटण मिल रहा है। (कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी)

धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयोका) ६वाँ बहनो के मंदिर का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा (भाईयोका) ६वाँ और बहनो के मंदिर का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ९-१२-२३ से ता. १३-१२-२३ तक शिक्षापत्री भाष्य पंचान्ह रात्रीय पारायण स.गु. शा. स्वा. सूर्यप्रकासदासजी गुरु स.गु. शा. स्वा. गोपालचरणदासजी (मूली-वांकानेर) के वक्ता पद से हुई। सम्पूर्ण प्रसंग का आयोजन स.गु. जे,.पी. स्वामी (कालुपुर) और स.गु. महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट) रहे थे। अ.नि. ईश्वरभाई मगनभाई पटेल, गं.स्व. कमलाबेन ईश्वरभाई पटेल परिवार ने यजमान पद का लाभ लिया था। ता. १३-१२-२३ को सुंदर शाकोत्सव मनाया गाय था। ता. १५-१२-२३ के दिन गाँव में प्रज्ञाचक्षु के विवाह अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। सभी को आशीर्वाद प्रदान किये थे।

सभा का सुंदर संचालन स.गु. शा. धर्मकिशोरदासजी (मुक्तराज स्वामी) ने सम्भाला था । धामो धाम से संत-महंत पधारे थे ।(श्री नरनारायणदेव युवकमंडल - धमासणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर की प्रथम वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) तथा वाली मंदिर के कोठारी हरिप्रसाददासजी के प्रेरणा मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में बिराजमान श्री गोपीनाथजी महाराज का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव ता. २-१२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा उल्लास पूर्वक पूर्ण किया गया था । यहाँ के सभी हरिभक्त ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट दर्शन करके धन्य हुए । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । (महंत शा. प्रेमप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओला का २५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव-शाकोत्सव

परमब्रह्म परमात्मा आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से और ओला श्री स्वामिनारायण मंदिर, श्री नरनारायणदेव युवक मंड लके सुंदर प्रबन्ध से तथा पाटोत्सव के यजमान प.भ. जगदीशभाई पटेल, प.भ. बिन्देशभाई जगदीशभाई पटेल और कथा के यजमान समस्त सत्संग परिवार ओला द्वारा ता. १४-१२-२०३ से १७-१२-२३ तक विदुरनीति त्रिदिनात्मक पारायण स.गु. शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल महंतश्री) के वक्ता पद से पूर्ण हुई ता. १७-१२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी का पाटोत्सव तथा शाकोत्सव और कथा की पूर्णाहुति की गई । सभा में यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया गया था । पूरे अवसर का संचालन स.गु. शा. स्वा. गोपालचरणदासजी (कलोल) ने किया था । धामोधामो से संत पधारे थे ।(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हनुमानपुरा (समौ) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद कालुपुर मंदिरके महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन मे तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर सभा समस्त सत्संग समाज हनुमानपुरा (समौ) के अच्छे प्रबन्ध से ता. ९ से १३ दिसम्बर २०२३ मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से श्रीमद् भावत पंचान्ह पारायण संगीत के मधुरधुन में हजारो कथा प्रेमी ने यह कथा सुनी थी । ता. १३-१२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कलमो द्वारा नवीन भव्य मंदिर में ठाकुरजी की मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधि से पुरी की गयी । सभा में कथा पूर्णाहुति की आरती करके यजमान परिवार तथा अन्य हरिभक्तो को प्रेम भरा आर्शीवाद दिये थे । पूरा गाँव तन, मन एवम् धन से पू र्ण सेवा का लाभ दिये थे । पूरे सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. दिव्यप्रकादासजी (नारणघाट महंतश्री) ने शोभा बढाया था । धामो-धाम से संत आकर आशीर्वाद दिये थे ।(कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

पालडी व्यास मंदिर में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से पालडी व्यास श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १९-१२-२०२३ केदिन भव्य शाकोत्सव संतो के कर कमलो द्वार मनाया गया था । प.भ. अंबालाल जीवरामदास पटेल, अ.सौ. नर्मदाबेन अंबालाल परिवार मुख्य दाता की सेवा दिये थे । गाँव के सभी हरिभक्त छोटी-बड़ी सेवा दिये थे । उनावा मंदिर के महंत शा. स्वा. देवप्रकाशदासजी गुरु स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) मार्गदर्शक थे । इस अवसर पर धामो-धाम से संत पधारे थे । (कोठारी श्री पालडी व्यास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डलोल का ३० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुरधामः) तथा स.गु. कोठारी स्वा. हरिप्रसाददासजी (वाली) के प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री

स्वामिनारायण मंदिर इलोल (ता. हिंमतनगर) का ३० वाँ पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था । ता. १४-१२-२३ से १८-१२-२३ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुरधाम) के वक्ता पद से पूर्ण हुई । ता. १८-१२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । आपश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती और यज्ञ की पूर्णाहुति की आरती की गई । तथा सभा में बैठे हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । बहनो को दर्शन देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे । स.गु. महंत शा. स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी (हिंमतनगर) ने अच्छा प्रबन्ध किये थे । (कोठारीश्री इलोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाम का ११० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. महंत स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाम (परकोटा) का ११० वाँ पाटोत्सव और शाकोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा उल्लास पूर्वक मनाया गया । धामोधाम से संत हरिभक्त पधारे थे । (सत्संग समस्त विरमगाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी कलोल में ६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी की प्रेरणा तथा पंचवटी कलोल श्री स्वामिनारायण मंदिर समस्त सत्संग समाज शा. स्वामी आनंदप्रकाशदासजी के आयोजन द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी का ६ वाँ पाटोत्सव ता. १६-१२-२३ से २०-१२-२३ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर के उपलक्ष्य में श्रीहरि स्मृति कथा पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वा. यज्ञप्रसाददासजी (कलोल महंतश्री) के वक्ता पद से की गयी । आचार्यश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी का ६ ठवाँ पाटोत्सव की आरती उल्लास पूर्वक की गई । सभा में जेतलपुर धाम के पंचवटी मंदिर के निर्माण कर्ता पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी आदि धामोधाम से संत पधारे थे । तथा प्रवचन देकर हरिभक्तो की खुश किये । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये । सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. गोपालचरणदासजी (कलोल) ने सुंदर रुप से किया था । पाटोत्सव में कई हरिभक्त छोटे-बडे सेवा का यजमान बनकर लाभ लिये थे । (कोठारीश्री पंचवटी मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कनिपुर का ५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा से तथा समस्त सत्संग समाज कनीपुर गाँव के सुंदर प्रबन्ध से ता. २०-१२-२३ से २१-१२-२३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर कनीपुर का ६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगीभूषण महाग्रंथ की कथा स.गु.शा. स्वा. सुव्रतस्वरुपदासजी (कालुपुर) के वक्ता पद से की गयी । ता. २१-१२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की गयी । धामोधाम से आये वंदनीय संतोने प्रेरक आशीर्वाद दिये ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभा में सभी को आशीर्वाद दिये । सभापति के सुदंर संचालन को स.गु. महंत शा. स्वा. व्रजभूषणदाजी (गांधीनगर से-२) ने शोभा बढाया था ।(कोठारीश्री कनीपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मार्गशीर्ष सुद-१५ की सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा अपने भविष्य के आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजकी प्रेरणा मार्गदर्शन से कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर प्रबन्ध से अपने पूनम की सभा में प्रत्येक मास आयोजन किया जाता है । उसी प्रकार मागसर माह में ता. २६-१२-२३ को पूनम की सभा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में स.गु.शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से की गई । गाँव से आये हजारो हरिभक्त कथा का श्रवण किये । अंत में प.पू. महाराजश्रीने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये । आज के पूनम सभा के यजमान अ.नि. नारायणभाई खुशालदास पटेल परिवार (मोखासणवाले), प.भ. रमेशभाई नारणभाई पटेल,

प.भ. विनोदभाई नारणभाई पटेल, प.भ. अश्विनभाई नारणभाई पटेल, नारायण डेवलपर्स, गोमतीबेन गोपालभाई पटेल, वडू - अमेरिका, जिसे भी पूनम की सभा का यजमान बनने की ईच्छा हो। वह कोठार कार्यालय में महंत स्वामी से सम्पर्क कर सकता है । सभा का संचालन पू. कोठारी मुनि स्वामीने किया था ।(कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

कोटा (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर रवि सभा-शाकोत्सव

परमकृपालु आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की असीमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कोटा मंदिर के महंतश्री स.गु. शा. स्वा. नारायणमुदिसजी (कालुपुर मंदिर कोठारीश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से अपने कोटा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रत्येक रविवार को रवि सभा का सुंदर आयोजन किया जाता है । जिस में हरिभक्तो के बच्चे मूल सम्प्रदाय के ज्ञान का सिंचन किया जाता है। रवि सभा से कई नये हरिभक्त बने है । ता. २४-१२-२३ को अपने मंदिर में रवि सभा के साथ भव्य शाकोत्सव तथा भजन-कीर्तन किया गया था । जिस में अपने हिन्दी भाषी महंत श्री शा. डी.के. स्वामी (माणसा), ब्र. स्वामी मुकुंदानदंजी (कालुपुर) आदि संतोने हिन्दी भाषा में रवि सभा करके शाकोत्सव की महिमा समझाये थे । भक्ति स्वामी, राजुभाई पटेल ने सुंदर प्रबन्ध किये थे । कोटा के हरिभक्तोने सुंदर यजमान बनकर लाभ उठाये । (कोठारी, कोटा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) का २४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन में तथा यहाँ के मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी व्रजभूषणदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) के २४ वे वार्षिक पाटोत्सव ता. १३-१२-२३ से ता. १७-१२-२३ तक मनाया गया था । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगीभूषण पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से हजारो हरिभक्त श्रवण किये थे । २४ वाँ पाटोत्सव के यजमान प.भ. रमेशभाई नथुभाई बावरवा, तथा समस्त सत्संग समाज (से-२) गांधीगनर ने लाभ उठाया था । ता. १७-१२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज पधारे थे । ठाकुरजी की आरती उतारे थे । सभा में आये यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । धामोधाम से संत आये थे । पू. महंत शा. स्वामी व्रजभूषणदासजीने सुंदर आयोजन किये थे । (कोठारीश्री गांधीनगर से-२ मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सोजा श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री) तथा स.गु. स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल) की प्रेरणा से सोजा गाँव के प.भ.अ.नि. रामकुंवरबेन शिवाभाई रेवीदास पटेल परिवार की दिव्य प्रेरणा से उनके परिवार के सभी यजमान पद से श्रीजी महाराज के खुशी के लिये ता. १८-१२-२३ से २४-१२-२३ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण सम्प्रदाय के सुप्रसिध्ध कथाकार पूज्य स.गु. शास्त्री श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से संगीतमय वातावरण में पूरी हुई । गाँव तथा आस-पडोस के हजारो हरिभक्तोने इस अवसर का लाभ लिया । ता. १८-१२-२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभा में कथा का सभी लोग श्रवण करके सभा में हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। ता. १९-१२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सभा में विराजकर कथा सुने तथा सभी को आशीर्वाद दिये । पूरे सभा का संचालन पू. स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीनारायणमुनिदासजी (कालुपुर कोठारीश्री) और स.गु. शा.स्वा. श्री गोपालचरणदासजी ९कलोल) ने सुंदर रुप से सभा सम्भाले थे । (स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी कोठारीश्री कालुपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (घनश्यामनगर पाटीदार) स्वर्ण जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी (कलोल) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (घनश्यामनगर पाटीदार) का रजत जयंती समारोह ता. २१ से २५ दिसम्बर तक उल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ के अर्न्तगत श्रीहरि उत्तर विभाग विचरण कथा का स.गु. महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल) ने रसपान कराया था । पूरा आयोजन सत्संग समाज-श्री नरनारायणदेव युवक मंडल माणेकपुर (घनश्यामनगर) द्वारा किया गया । गांव के प्रत्येक हरिभक्त यजमान बनकर सेवा दिये थए । ता. २१-१२-२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। सेवा देने वालो को आशीर्वाद दिये थे । ता. २२-१२-२३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए । तथा सेवा देने वाले सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामीश्री आदि धामो से संत-महंत पधारे थे ।

पूरे सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) और स.गु. स्वा. गोपालचरणदासजी (कलोल) ने सुंदर रुप से किये थे । पूरा गाँव अच्छा प्रबन्ध करके अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुए । (कोठारीश्री, माणेकपुर - घनश्यामनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा निकोल के लाभार्थी हेतु श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रिय सप्ताह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री) की मार्गदर्शन से तथा समस्त सत्संग समाज पूर्व विस्तार श्री नरनारायणदेव युवक मंडल पूर्व विस्तार (एप्रोच) बापुनगर हर्षदकोलोनी, कर्म शक्ति, नवा नरोडा, निकोल गाम, आदिश्वर नगर, नरोडा के सुंदर सहयोग से नवा निकोल श्री स्वामिनारायण मंदिर के लाभ हेतु ता. २५-१२-२३ से ता. ३१-१२-२३ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रीय सप्ताह पारायण सम्प्रदाय के सुप्रसिध्ध कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से पूर्ण हुई । इस अवसर पर प्रसंगोचित प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद प्रदान किये ।

पूरे अवसर का संचालन स.गु. शा.स्वामी श्री व्रजभूषणदासजी (महंतश्री गांधीनगर से-२) ने किया था । कथा के मुख्य यजमानश्री प.भ. डॉ. झवेरभाई आर. पटेल परिवार था । हरिकृष्ण किडनी अस्पताल था । धामोधाम से संत-महंतश्री पधारकर हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।

इस अवसर भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । जिसके यजमान प.भ. कालुभाई परसोतमभाई गौदाणी, प.भ. मेहुलभाई अर्जणभाई वघासिया परिवार था । कथा के मध्य कई हरिभक्त मंदिर में भूमिदान सेवा को लिखवाया था । (कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर)

बामरोली (म.प्र.) मंदिर का पाटोत्सव

अपने आदि आचार्य महाराज प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री जब जब छपैया पधारते थे । तब मध्य प्रदेश के बामरोली गाँव में रहते थे । इस कारण से इस गाँव के भक्त अपने आदि आचार्य महाराज को भगवान की तरह मानते थे । और महाराजश्री को यह गांव प्रिय था । जिस कारण से पू. महाराजश्री के संकल्प से श्री नरनारायणदेव देश का यहाँ पर शिखरबध्ध मंदिर का निर्माण हुआ है ।

ता. २-१२-२३ के दिन अपने प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी हरिभक्तो के समूह के साथ छपैया का दर्शन करके यहाँ पर पधारे थे । संयोगवस ठाकुरजी का ९७ वाँ पाटोत्सव अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के अ.नि. भंडारी स्वामी रामचरणदासजी के निमित्त मनाया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो द्वारा श्री राधाकृष्णदेव का षोडशोपचार महाभिषेक पूरा किया गया । इस अवसर पर अपने प.भ. श्री करशनभाई राघवाणी के तरफ से समग्र बामरोली गांव को भोजन कराये थे । मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मीनारायण स्वामीने अच्छी व्यवस्था की थी । प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री गांव में घुम कर दूध की धारा का वचनदिये थे । यहाँ पर कोई मरेगा तो उसे महाराज लेने आयेगे । कोई जीवन हो उसे यमराज के दूत नही ले जायेगे । आज भी यह वचन सत्य है । भगवान दर्शन देकर ले जाते है । ऐसा उदाहरण आज भी देखा जाता है । (कोठारी स्वामी बामरोली)

नवावाडज बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर समस्त सत्संग समाज श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नवा वाडज के अच्छे आयोजन से ता. २७-११-२३ ३-१२-२३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर

नवावाडज बहनो के लिये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण रात्रीय सप्ताह पारायण सम्प्रदाय के सुप्रसिध्ध कथाकार पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्ता पद से पूर्ण की गयी।

महोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. अमृतबेन शंभुभाई पटेल लखतरिया परिवार, श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति के यजमान प.भ. रेवाबेन कनुभाई पटेल परिवार था। श्रीनरनारायणदेव के मूर्ति के यजमान अ.नि. स.गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा से प.भ. कांतिभाई गोविंदभाई परमार, शोभनाबेन कातिभाई परमार ने लाभ उठाया था। ता. ३-१२-२३ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधि से पूर्ण कि गई। बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभा में विराजमान नहोकर सभीको आशीर्वाद प्रदान किये। कथा की पूर्णाहुति की आऱती प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण की गई। ठाकुरजी के छप्पनभोग की आरती प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के करकमलो से पूर्ण की गई। इस अवसर पर धामोधाम से संत-महंतश्री और सांख्ययोगी बहने पधारी थी। पूरे अवसर के सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (महंतश्री गांधीनगर) ने किया था। (कोठारीश्री नवा वाडज)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली मंदिर में शाकोत्सव

श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में ता. २६-१२-२३ के दिन मूलीधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूली प्रदेश का भव्य शाकोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा अलौकिक वघार लगाकर किये। भगवान के पुत्र द्वारा शाक का प्रसाद ग्रहण करना यह भाग्यशाली लोगो का अवसर है। संत-हरिभक्तो द्वारा कीर्तन गाया गया था। हजारो मूली देश के हरिभक्त शाकोत्सव से लेकर देव दर्शन धर्मकुल का दर्शन करके धन्य हुए। प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभा में सभी को आशीर्वाद भेजे थे। मूली मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजीने अच्छी व्यवस्था की थी। (कोठारीश्री मूली मंदिर)

सुरेन्द्रनगर मंदिर का १८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी परमकृपाल श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ मंदिर के स.गु. स्वा. उत्तमप्रियदासजी, मंदिर निर्माण कर्ता स.गु. स्वा. प्रेमजीवनदासजी के प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर के अ.नि. प.भ. जयंतिलाल कालीदास परीख तथा अ.नि. मुकुंदराय कालीदास परीख परिवार के तरफ से यहाँ के मंदिर का १८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण महंत स.गु.शा. स्वा. व्रजविहारीदासजी तथा सगु. शा.स्वा. सत्संगसागरदासजी के वक्तापद से पूर्ण हुई। ता. २८-११-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत पार्षद मंडल के साथ पधारे थे। और निज मंदिर में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती, सभा में श्री तुलसी विवाह, श्रीहरियज्ञ और कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभी संतो हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। सभा का संचालन शा.स्वा. राधारमणदासजीने किया था। अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी और अंजली, मूली, धोलका, जेतलपुर आदि धामो से संत पधारे थे। हरिभक्त भाई-बहनो ने उत्तम सेवा दी थी। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

સમગ્ર ધર્મકુળનાં સાંનિધ્યમાં

શ્રી નરનારાયણદેવ દેશનો સંયુક્ત

॥ શાકોત્સવ ॥

રવિવાર તા.28-1-2024

સેવા

પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞા અને પ.પૂ. લાલજી મહારાજ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના અધ્યક્ષ સ્થાને શાકોત્સવ ઉજવવાનું નિધરિલ છે.

મહા મહોત્સવમાં સેવાનો લાભ

રૂા. ૧,૦૦,૦૦૦/-	- સહ યજમાનશ્રી
રૂા. ૫૧,૦૦૦/-	- શુભેચ્છક યજમાનશ્રી
રૂા. ૮,૧૦૦/-	- ઘી નો ડબ્બો - એક
રૂા. ૫,૧૦૦/-	- ગોળ - ૧૦૦ કિલો
રૂા. ૩,૧૦૦/-	- સુકોમેવો - ૫ કિલો
રૂા. ૨,૧૦૦/-	- તેલ નો ડબ્બો - એક
રૂા. ૧,૧૦૦/-	- શાકભાજીની સેવા

ઉપરોક્ત સેવા પોતાના નજીકના મંદિરમાં આયોજન થયુ હોય તો ત્યાંથી લાભ લેવો અથવા આપણા મુખ્ય મંદિર કાલુપુરથી લાભ લેવો સેવા લખાવી પાકી પહોંચ મેળવી લેવી.

કાલુપુર સેવા સંપર્ક નંબર

- કોઠારીશ્રી : મુનિ સ્વામી - ૯૯૦૯૯ ૭૬૦૦૯
- કોઠારીશ્રી : બાલુ સ્વામી - ૯૪૨૭૦ ૭૦૩૭૧
- સુરેશભાઈ પટેલ - ૯૧૭૩૦ ૮૯૦૩૦

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર,અમદાવાદ એક

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

कारतक सुद-१ प.भ. मगनभाई गोविंदभाई सांगाणी (नाना गोखरवाला) । **कारतक सुद-२** प.भ. हार्दिक गोपालभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. स्मित विपुलकुमार (अहमदाबाद), प.भ. जयसुखभाई कनुभाई जीयाणी (बापुनगर), प.भ. मोहनभाई नरसाभाई पटेल (लालोडा), प.भ. जटाशंकर बापा (ईन्दौर), प.भ. भरतकुमार जयंतीलाल पटेल (कालीगाम) । **कारतक सुद-३** प.भ. चेतनभाई लालाभाई पटेल (करजीसण), प.भ. मफतलाल लक्ष्मीचंद पटेल (जामला) । **कारतक सुद-४** प.भ. लालबाई लालजीभाई केराई (गांधीधाम-कच्छ), अ.नि. अरविंदभाई सोमचंदभाई पटेल (मोखासण) । **कारतक सुद-५** प.भ. मितेष रमेशचंद्र शाह (अहमदाबाद), प.भ. लालजीभाई पोपटभाई पटेल (पच्छम), प.भ. पावन भरतभाई मोदी (कुडासण), प.भ. हितेन्द्रभाई नटवरलाल बारोट (जगराल), प.भ. मिनाक्षीबेन मस्की (अहमदाबाद) । **कारतक सुद-६/७** प.भ. तुषार डाह्याभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. विपुलभाई बावचंदभाई लाखाणी (अहमदाबाद), अ.नि. अंबाबेन एस. ठुम्मर (पीपलज) । **कारतक सुद-८** प.भ. नारणभाई गांडाभाई चौधरी (प्रतापपुरा), अ.नि. शकरीबेन जीवरामभाई (राणीप), प.भ. शांतिलाल नाथालाल पटेल (खेरवा), प.भ. शांताबेन अमृतभाई पटेल (सोजा) । **कारतक सुद-९** प.भ. किरणभाई गोविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. ककलभाई हेमचंदभाई पटेल (अमेरिका) । **कारतक सुद-१०** प.भ. धवलभाई रसिकभाई पटेल (भाणपुर-विजापुर), प.भ. देवश्री जीगरभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. शिवजी देवजी पांचाणी (केरा-कच्छ) । **कारतक सुद-११** अ.नि. मेघबाई शिवजी पांचाणी (अहमदाबाद) । **कारतक सुद-१२** श्री रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज पाटोत्सव - ह. शैलेषभाई भावसार, प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. राधाबाई लालजी राबडीया (भुज-कच्छ), प.भ. हिरेनभाई चंदुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नीरूबेन विपुलभाई नटवरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. संगीताबेन पियुषभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कनुभाई जेरामभाई बाबरीया (अहमदाबाद), प.भ. शैलेषभाई पी. लाठीया (अमरेली), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), श्री सहजानंद ईम्पेक्ष श्री उर्मिक चौधरी (ईश्वरपुरा), प.भ. सुनिलकुमार जयंतीभाई मोदी (अहमदाबाद), प.भ. लाभुबेन लक्ष्मीकांत वसाणी (राजकोट), प.भ. देवश्री जीगरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. वालबाई नारण जेसाणी (बलदीया-कच्छ), अ.नि. रंजनबेन राजेशकुमार पटेल (अहमदाबाद) । **कारतक सुद-१३** श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर-भक्तिनगर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंगे, अ.नि. रमणभाई दलसंगभाई चौधरी (भीमपुरा), प.भ. जीनलबेन केतनभाई पटेल, गं.स्व. रेखाबेन नरोतमदास मीस्त्री (अहमदाबाद), अ.नि. रतनबाई वालजी वेकरीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. मासुम भरतकुमार पटेल (कटोसण) । **कारतक सुद-१४** प.भ. हेनिल दिपकभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. शारदाबेन बी. सोनी (बोटाद), प.भ. बाबुभाई मणीलाल पटेल (देलवाडा), अ.नि. रमणभाई दलसंगभाई चौधरी (भीमपुरा), प.भ. मंजुलाबेन भीमजीभाई कासोदरा । **कारतक सुद-१५** अ.नि. नारण खीमजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. ईन्द्रवदनभाई रावजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. संगीताबेन किरणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. दुर्लभभाई गोविंदभाई सावलीया (अहमदाबाद), प.भ. निष्ठाबेन कनुभाई मालाणी (महुवा) ।

कारतक वद-१ प.भ. मनीषभाई रावजीभाई पटेल (अंबापुर), प.भ. प्रतिककुमार दशरथभाई पटेल (भाणपुर-विजापुर), प.भ. निलेशभाई अमृतभाई पटेल (वेडावाला-अहमदाबाद) । **कारतक वद-२** प.भ. भाणाभाई कानजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. रसिकभाई शिवदास पटेल (आखज), प.भ. संजयकुमार बाबुभाई पटेल (माणसा), प.भ. प्रतिकभाई रमेशभाई पटेल (पोर) । **कारतक वद-३** प.भ. शामजी विसराम वालाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. संजयभाई गोरधनभाई पटेल (महेलाव), प.भ. अश्विन शामजी भंडेरी (नारायणपर-कच्छ) । **कारतक वद-४** प.भ. कल्पेशभाई देवेन्द्र सोनेजी (हलवद), प.भ. विनोदभाई वालजीभाई सोनी (अहमदाबाद) । **कारतक वद-५** अ.नि. शिवजी वालजी भूडीया (माधापर-कच्छ), अ.नि. मंगुबेन बलदेवभाई पटेल (कुंडाल-कडी), प.भ. क्रिसिव मितुलकुमार पटेल (धमासणा), प.भ. गोविंद देवजी बारेवडीया (सेलारी), प.भ. अंजली यशभाई (पर्थ-ओस्ट्रेलीया) । **कारतक वद-६** श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज (बहेनोनुं) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंगे सत्संग समाज, प.भ. भरतभाई प्रहलादभाई (राणीप), प.भ. मनीष जीतुभाई चोकसी (अहमदाबाद), प.भ. रीना राजुभाई चौधरी (बालवा), प.भ. रमेशभाई गोविंदभाई सह परिवार (करजण) । **कारतक वद-७** प.भ. अनीष मुकेश केराई (रामपर वेकरा-कच्छ), प.भ. दशरथभाई शंभुभाई पटेल (वजापर), प.भ. महेन्द्रसिंह बहादुरसिंह झाला (अडवाल), प.भ. दिपकभाई कानजी राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. बाबुभाई मणीलाल शाह परिवार (अहमदाबाद) । **कारतक वद-८** प.भ. हरिशभाई कानजी नाथा पिंडोरीया (मानकुवा-कच्छ) । **कारतक वद-९** प.भ. रिध्धि अने सिध्धि लग्न प्रसंगे बापुनगर, प.भ. डॉ. हिंमतलाल जे. चोपडा (कलकता) । **कारतक वद-१०** प.भ. अरजण प्रेमजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. लीलाबेन कनैयालाल चोकसी (अहमदाबाद), अ.नि. कमलेशभाई कांतिभाई पटेल, प.भ. धरणी चंद्रेशभाई पटेल (लग्न प्रसंगे) (आकरूंद) । **कारतक वद-१२** अ.नि. मीराबेन बाबुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भावेशभाई चि. पुत्रीना लग्न प्रसंगे (भुज-कच्छ), प.भ. देवर्षीबेन रूतुलकुमार पटेल (गांधीनगर), प.भ. चांदनीबेन संजयभाई पटेल (डभाण), प.भ. नाथाभाई चतुरभाई पटेल (लसुन्द्रा), अ.नि. वाघजीभाई एम. पटेल (वडदला), प.भ. दशरथभाई अंबालाल पटेल (मोटेरा), प.भ. विष्णुभाई कांतिभाई पटेल (वडु), प.भ. हर्षदभाई प्रभुभाई पटेल (अहमदाबाद), हरिॐ सत्संग मंडल (अहमदाबाद), प.भ. अलकाबेन जगदीशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. हार्दिकभाई बी. पटेल (गांधीनगर) । **कारतक वद-१४** अ.नि. स.गु. स्वामी नंदकिशोरदासजी तथा अ.नि. स.गु. स्वामी घनश्यामप्रियदासजी (भुज-कच्छ). **कारतक वद-३०** प.भ. हसमुखलाल मांडलीया (अमेरिका) ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर - कालुपुर परिवार परिचय फोर्म

नाम --

पता --

मो. नंबर [ ] [ ]

ई-मेल ID --

मूल वतन — गाँव ---------------- तहसील ---------------- जिला ----------------

जन्म तारीख [ ] लग्न तारीख [ ]

अपना मंदिर जहाँ पर नित्य दर्शन के लिये जाते है [ ]

अपने नौकरी व्यवसाय की जानकारी --

मंदिर को जरुरत हुई तो कौन सा विभाग और किस प्रकार की सेवा कर सकते है वह विगत

विशेष सूचना [ ]

इस फोर्म को भरके कालुपुर मंदिर में भेजने की विनती है ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

उनावा मंदिर में शाकोत्सव मनाते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री नरनारायणदेव देश के संयुक्त शाकोत्सव कार्यक्रम के उपलक्ष्य में ।
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में मिटिंग ।

माणेकपुर (घनश्यामनगर) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. महाराजश्री तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

समौ (हनुमानपुरा) मंदिर में श्री हनुमानजी की प्रतिष्ठा करते प.पू. महाराजश्री तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

हिम्मतनगर मंदिर के प्रथम पाटोत्सव के अवसर पर
सभा को आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

धमासणा मंदिर के पाटोत्सव पर प.पू. लालजी महाराजश्री
की आरती उतारते, यजमान परिवार ।

लवारपुर (गांधीनगर) रात्रि पारायण के अवसर पर
सभा में आशीर्वाद प्रदान करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026 issued SSP Ahd Valid up to 24-02-2024

नवा निकोल (अहमदाबाद) नूतन मंदिर के उपलक्ष्य में आयोजित पारायण के अवसर पर शाकोत्सव करते तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

दयापर (कच्छ) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

मूली मंदिर मं शाकोत्सव के अवसर पर शाक वघारते तथा जरुरतमंद लोगो को जैकेट वितरित करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

प्रत्येक पूनम पर कालुपुर मंदिर में आयोजित सत्संग सभा में आशीर्वचन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।